श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. :

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ January-2024

ऐनरोलमेन्ट नंबर 8 शहर ____________

विद्यार्थी का नाम ____________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान	
(१)	मोक्ष प्राप्ति
(२)	सूर्य
(३)	महामारी
(४)	तपागच्छ
(५)	श्री पार्श्वचंद्रसूरि
(६)	मिश्र औदारिक
(७)	उपद्रवो
(८)	विकलेन्द्रिय
(९)	स्वोपक्षवृत्ति
(१०)	परिपक्वता।
(११)	बाह्यवर्तन
(१२)	पंचागी आगम
(१३)	विजयादेवी
(१४)	सूक्ष्मक्रीया निवृती
(१५)	हस्तप्रते
(१६)	कार्यकारण।
(१७)	जिन प्रणीत
(१८)	चैत्यवास
(१९)	सयोगी गुणस्थान
(२०)	आजीविका।

प्रश्न-२ एक ही शब्द में			
(१)	कर्म	(५)	पृथ्वीतल पर
(२)	श्री देवसूरीजी	(६)	काययोग
(३)	मानदेव सूरि	(७)	मे
(४)	समस्तलोक व अलोक	(८)	स्तवना दी गई
(५)	शांतिनाथ भगवान	(९)	हाथ मे रहे
(६)	कर्म के अनुसार	(१०)	सूर्य
(७)	तिसरा व चोथा आरा	(११)	छोडकर
(८)	आचार्य सोमप्रभसूरि	(१२)	एवम्
(९)	अविरत सम्यगदृष्टि	(१३)	करके
(१०)	पापोदय	(१४)	बाली के
(११)	सातो नरको मे	(१५)	वनस्पतिकाय
(१२)	वेदनीय व आयुष्य	(१६)	पाते है
(१३)	रावणगंगा।	(१७)	तुष्ट हुए
(१४)	सदालपुत्र	(१८)	सातो मे
(१५)	षडदर्शन	(१९)	जिनके
		(२०)	प्रशस्त

प्रश्न-३ शब्दार्थ	
(१)	देव
(२)	होते है
(३)	मथनी
(४)	युक्त

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ			
(१)	6	(६)	3
(२)	10	(७)	9
(३)	7	(८)	4
(४)	1	(९)	2
(५)	8	(१०)	5

प्रश्न-५ संख्या में जवाब	
(१)	44
(२)	5
(३)	666
(४)	देशोन पूर्व क्रोडवर्ष
(५)	22
(६)	1688
(७)	16
(८)	5
(९)	7
(१०)	7

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	20
(२)	✓	(२)	12
(३)	×	(३)	1
(४)	×	(४)	9
(५)	✓	(५)	17
(६)	✓	(६)	18
(७)	×	(७)	12
(८)	✓	(८)	6
(९)	×	(९)	14
(१०)	✓	(१०)	9

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	कुल गुण

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

Ans→

प्रश्न - ८

१. Ans→ जैन शास्त्रो के अनुसार प्रत्येक कार्य सिद्धी के काळ, स्वभाव, नियति, पुरुषार्थ व कर्म ये पांच कारण है उसमे (1) काळ - जो कार्य जिस समय होनेवाला होता है वह उसी समय होता है। जैसे ग्रीष्म ऋतु मे आम आते है, शीत ऋतु मे मेथी आती है वैसे ही सारे कार्यो का समय होता है। (2) स्वभाव - कार्यसिद्धी के लिये काळ प्राप्त हुवा पर स्वभाव का संयोग नही मीळे तो कार्य सिद्ध नही होता है (3) नियती - काळ व स्वभाव अनुकुळ हो पर यदी काळ की परीपक्वता नही हुई हो तो कार्य सिद्ध नही होता। काळ अनुकुळ हो पर नियती अनुकुळ नही तो कार्य पूर्ण होता नही।

२. Ans→ मुनीश्री यशोविजयजी के तेजस्वीता, बुद्धिप्रतिभा और सुयोग्यता को ध्यान मे रखकर श्रेष्ठि श्रीधनजी सुरा ने निवेदन किया, भगवंत इस महात्मा को काशी जाकर विद्याभ्यास करावो। यशोविजयजी काशी मे गंगा नदी के किनारे ऐंकार के जाप से श्री सरस्वतीदेवी को प्रसन्न कर वरदान प्राप्त किया। काशी मे तीन बरस और आगरा मे च्यार बरस तक प्रेकंड विद्वान भट्टाचार्य के षडदर्शन वगैरह का गहन अभ्यास किया। फीर से ग्रंथो रचना की इसीलिये काशी के विद्वानोने उन्हे 'न्याय विशारद' व 'न्यायाचार्य' ये दो सम्मान भरे बिरुद दिये।

३. Ans→ तिर्थंकर नामकर्म प्राप्त किया वह जिव सयोगी गुणस्थानक पर तिर्थंकर नामकर्म के उदय से केवलज्ञानी बनकर जगपती त्रिभुवनाधिपति बनता है व जिनेंद्र कहलाते है। तिर्थंकर प्रभु च्योतीस अतीशयोसे युक्त होते है। मनुष्य व देवता उन्हे नमस्कार करते है। पूजते है, श्रेष्ठ सर्वोत्तम उपदेश से तीर्थंकर शासन प्रवर्तते है। केवलज्ञानी भगवंत पृथ्वीतलपर उत्कृष्ट से आठ वर्ष कम पूर्व क्रोड वर्ष तक सुवर्ण कमलोपर पैरे रखकर विचरते है, करोड सुर-असुर सेवा करते है। अष्टप्रतीहार्य युक्त होते है।

४. Ans→ पृथ्वीकाय दस पद याने पांच स्थावर (पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतीकाय) तिन विकलेंद्रिय (बेइंद्रीय, तेइंद्रिय, चउरेंद्रिय), गर्भज तिर्यंच और गर्भज मनुष्य का समावेश होता है। पृथ्वीकाय आदी दस पदो के बारे मे बताते है, की वे पृथ्वीकाय, अपकाय और वनस्पतीकाय मे उत्पन्न होते है। पृथ्वीकाय आदी दस पदो मेसे निकले हुवे जिव तेउकाय और वायुकाय मे उत्पन्न होते है। इन दस पदो मे पृथ्वीकाय-अपकाय और वनस्पतीकाय के जिव आते है और तेउकाय व वायुकाय मे जाते है।

५. Ans→ सद्भाग्यसे श्रीपार्श्वचंद्रसुरीजी को पहचानने के लीये उनके ग्रंथ और लेख अच्छे प्रमाण मे उपलब्ध है। जिसमे विचारवैभव, उदात्त आशय और सत्यनिष्ठा के वास्तवीक दर्शन होते है। "सप्तपदीशास्त्र", "संघरंगप्रबंध", "स्वंदक च्चरी", "सुरादिपीका", "रुपकमाला", "पुजाशतक", "विधीशतक", "विधीविचार", "उपदेशसार" वगैरहे संस्कृत व प्राकृत व गुजराती भाषा मे उनके विपुल साहीत्य, गद्य-पद्य उपलब्ध है। सेरबाबंध प्रकरण, छत्तीसिया, बत्तीसीया, कुलको, रास, स्तवन, सज्झाय, स्तुती वगैरह मे उनकी विद्वता, कवित्व, भक्ती और मौलीकता के सुंदर दर्शन होते है।